

चतुर्थः पाठः

वर्षावर्णनम्

1. रजः प्रशान्तं सहिमोऽद्य वायुर्निदाघदोषप्रसराः प्रशान्ताः ।

स्थिता हि यात्रा वसुधाधिपानां प्रवासिनो यान्ति नराः स्वदेशान् ॥

शब्दार्थ : सहिमः-शीतलः-ठंडा । प्रसराः-विस्ताराः-फैलाव ।

सरलार्थ : (वर्षाऋतु में) धूलिशान्त हो गयी है, हवा में शीतलता आ गयी है, गर्मी

का फैलाव शान्त हो गया है, राजाओं की युद्धयात्रा स्थगित हो गई है और प्रवासी लोग

अपने घर को जा रहे हैं ।

2. क्वचित्प्रकाशं क्वचिदप्रकाशं नभः प्रकीर्णाम्बुधरं विभाति ।

क्वचित् क्वचित्पर्वतसंनिरुद्धं रूपं यथा शान्तमहार्णवस्य ॥

शब्दार्थ : प्रकीर्णाम्बुधरम्-विच्छिन्नमेघयुक्तम्- छितराये मेघों से भरा ।

संनिरुद्धम्-नियन्त्रितम्, परिवृतम्-रुका हुआ, घिरा हुआ । महार्णवः-महासागरः-बड़ा समुद्र ।

सरलार्थ : कहीं प्रकाश है तो कहीं अंधकार है, आकाश छितराये मेघों से भरा हुआ है । कहीं कहीं पर्वत मेघों से घिरा हुआ प्रशान्त महासागर के सदृश प्रतीत हो रहा है ।

3. व्यामिश्रितं सर्जकदम्बपुष्पैर्नवं जलं पर्वतधातुताम्रम् ।

मयूरकेकाभिस्नुप्रयातं शैलापगाः शीघ्रतरं वहन्ति ॥

शब्दार्थ : व्यामिश्रितम्-मिलितम्-मिला हुआ, मिश्रित । सर्जः-सालवृक्षः-साल

का पेड़ । ताम्रम्-रक्तवर्णम्-लाल रंग का । केका-मयूरस्य रवः-मोर की बोली । शैलापगाः-पर्वतीया नद्यः-पहाड़ी नदियाँ ।

सरलार्थ : साल और कदम्ब पुष्पों से मिला हुआ, पर्वतीय धातुओं से मिश्रित ताम्ररंग का पानी मयूर की बोली का अनुकरण करती हुई नदियाँ शीघ्रता से बह रही हैं ।

4. रसाकुलं षट्पदसंनिकाशं प्रभुज्यते जम्बुफलं प्रकामम् ।

अनेकवर्णं पवनावधूतं भूमौ पतत्याम्रफलं विपक्वम् ॥

शब्दार्थ : षट्पदसंनिकाशम्-भ्रमर-समानम्-भौरोंके रूप का । पवनावधूतम्-

वायुना संचालितम्-हवा से हिलता हुआ ।

सरलार्थ : रस से भरे हुए भौरों के रंग के जामुन के फल पर्याप्त मात्र में खाए जाते हैं । हवा से हिलता हुआ अनेक रंग के पके हुए आम जमीन पर गिरते रहते हैं ।

5. विद्युत्पताकाः सबलाकमालाः शैलेन्द्रकूटाकृतिसंनिकाशाः ।

गर्जन्ति मेघाः समुदीर्णनादा मत्ता गजेन्द्रा इव संयुगस्थाः ॥

शब्दार्थ : विद्युत्पताकाः-विद्युत् पताका येषां ते-बिजली रूप ध्वज वाले कूटाकृति : -शृङ्गस्य आकारः-चोटी का आकार । समुदीर्घनादाः-ध्वनिपूर्णाः-गरज वाले । संयुग-स्थाः-युद्धे अवस्थिताः-युद्ध में वर्तमान ।

सरलार्थ : विद्युतरूपी पताका वाले बगुलों की पंक्तिमालाओं वाले मेघ युद्धभूमि मदमत हाथियों के समान गरज रहे हैं ।

6. वर्षोदकाप्यायित-शाद्वलानि प्रवृत्तनृतोत्सवबर्हिणानि ।
वनानि निर्वृष्टबलाहकानि पश्यापराहणेष्वाधिकं विभान्ति ॥

शब्दार्थ : आप्यायितम्-पूर्णम्, तृप्तम्-भरा हुआ, सम्पन्न । शाद्वलानि-सतृणानि क्षेत्राणि-घास के मैदान । बर्हिणः-मयूरः-मोर । निर्वृष्टः-वर्षणेन रिक्तः-वर्षा के बाद खाली । बलाहकः-वारिधरः मेघः-बादल ।

सरलार्थ : वर्षा के जलों से भरे हुए धानों के खेत, नृत्य में प्रवृत्त मोर, वर्षा के बाद खाली हुए बादल दोपहर के पश्चात् देखने में अधिक सुन्दर लगते हैं ।

7. समुद्रहन्तः सलिलातिभारं बलाकिना वारिधरा नदन्तः ।
महत्सु शृंगेषु महीधराणां विश्रम्य विश्रम्य पुनः प्रयान्ति ॥

शब्दार्थ : बलाकिनः-बकपक्षियुक्ताः-बगुलों से भरे हुए ।

सरलार्थ : जलों के अत्यधिक भार को अच्छी तरह से बहन करते हुए, बगुलों से युक्त होकर, गरजते हुए, जल को धारण करने वाले बादल पर्वतों की बड़ी-बड़ी चोटियों पर बार-बार आराम करके फिर से आगे चले जा रहे हैं ।

8. वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति ।

नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवङ्गाः ॥

शब्दार्थ : शिखिनः-मयूराः-मोरों के समूह ।

सरलार्थ : नदियाँ बह रही हैं, बादल बरस रहे हैं, मस्त हाथी गरज रहे हैं, वन के भाग सुशोभित हो रहे हैं, प्रियाओं से रहित जन प्रियजनों का चिंतन कर रहे हैं तथा मेढक साँस ले रहे हैं ।

9. प्रहर्षिताः केतकपुष्पगन्धमाघ्राय मत्ता वननिर्झरेषु ।

प्रपातशब्दाकुलिता गजेन्द्राः सार्धं मयूरैः समदा नदन्ति ॥

शब्दार्थ : प्रहर्षिताः-प्रसन्नाः-प्रसन्न, प्रमुदित ।

सरलार्थ : केतकी फूलों के सुगन्ध का पान कर वन के झरनों में मतवाले हाथी प्रसन्न होकर प्रपात के शब्दों को आकुलित करते हुए हाथी मयूरों के समान बोलते हैं ।

10. धारानिपातैरभिहन्यमानाः कदम्बशाखासु विलम्बमानाः ।

क्षणार्जितं पुष्परसावगाढं शनैर्मदं षट्चरणास्त्यजन्ति ॥

शब्दार्थ : विलम्बमानाः-वर्तमानाः, संसक्ताः-टिके हुए । अवगाढम्-निमग्नम्, पूर्णम्-डूबा हुआ ।

सरलार्थ : वर्षा की धारा से आहत, कदम्ब के पेड़ पर टिके हुए सद्यः प्राप्त किए हुए पुष्प के रस में डूबे हुए भौरे मद को छोड़ रहे हैं ।

11. षट्पादतन्त्रीमधुराभिधानं प्लवंगमोदीरितकण्ठतालम् ।

आविष्कृतं मेघमृदंगनादैर्वनेषु संगीतमिव प्रवृत्तम् ॥

शब्दार्थ : षट्चरणाः—षट्पदाः भ्रमराः—भौरै । प्लवंगमः—वानरः—बन्दर ।
उदीरितम्—उच्चारितम्—उठाय गया, बोला गया ।

सरलार्थ— भौरों के मधुर गुंजन, वन्दरों के कंठ से निकलने वाली बोली, मृदंग की तरह बादलों की गड़गड़ाहट से जंगल संगीतमय—सा प्रतीत हो रहा है ।

12. नवाम्बुधाराहतकेसराणि ध्रुवं परित्यज्य सरोरुहाणि ।

कदम्बपुष्पाणि सकेसराणि नवानि हृष्टा भ्रमराः पिबन्ति ॥

शब्दार्थ : सरोरुहाणि—कमलानि—कमल के फूल

सरलार्थ— वर्षा के नए जल की धारा से आहत कमल के फूल पराग त्याग रहे हैं । सपराग कदम्ब के फूलों का रस चूसकर भौरें प्रसन्न हो रहे हैं ।

व्याकरणम्

समास :

सहिमः—हिमेन सह वर्तमानः (सहार्थे बहुव्रीहिः) । निदाघदोषप्रसराः— निदाघस्य ग्रीष्मस्य दोषाणां तापादीनां प्रसराः विस्ताराः(षष्ठीतत्पुरुषः) । प्रकीर्णाम्बुधरम् — प्रकीर्णाः विच्छिन्नाः अम्बुधराः मेघाः यस्मिन् तत् (बहुव्रीहिः) । पवनावधूतम् — पवनेन अवधूतम् (तृतीयातत्पुरुषः) । विद्युत्पताकाः — विद्युत् एव पताका येषां ते (बहुव्रीहिः) । सबलाकमालाः — बलाकानां मालाः (षष्ठीतत्पुरुषः), ताभिः सह वर्तमानाः (सहार्थे बहुव्रीहिः) । समुदीर्णनादाः — समुदीर्णः समुत्थितः नादः येषां ते (बहुव्रीहिः) । वर्षोदकाप्यायितशाद्वलानि— वर्षोदकेन आप्यायितानि (तृतीयातत्पुरुषः), तथाभूतानि शाद्वलानि येषु तानि वनानि (बहुव्रीहिः) पुष्परसावगाढम् — पुष्परसैः अवगाढम् निमग्नम् (सप्तमी—तत्पुरुषः) ।

सन्धिः

सहिमोऽद्य = सहिमः + अद्य । क्वचिदप्रकाशम् — क्वचित् + अप्रकाशम् । पतत्याम्रफलम् — पतति + आम्रफलम् । पश्यापराहणेष्वधिकम् — पश्य + अपराहणेषु + अधिकम् ।

व्युत्पत्तिः

प्रवासिनः— प्र + वस् + णिनि । अवधूतम् — अव + धूञ् + क्त । समुदीर्णः — सम् + उद् + ईर् + क्त । विपक्वम् — वि + पच् + क्त । समुद्वहन्तः — सम् + उद् + वह् + शतृ । विश्रम्य — वि + श्रम् + ल्यप् । आघ्राय — आ + घ्रा + ल्यप् । अवगाढम् — अव + गाह् + क्त । विलम्बमानाः — वि + लम्ब् + शानच् ।

वर्षा का यथार्थ चित्रण करने वाले इस पाठ में इस ऋतु के कई उपादानों का निरूपण है जैसे - मेघ, कदम्ब, जम्बूफल, आम्र, पर्वतीय नदियाँ, बलाका, भ्रमर, वन के निर्झर, कमल इत्यादि। ये उपकरण पाठक को अरण्य में या सुन्दूर ग्राम के परिवेश में ले जाते हैं। वर्षा में मयूरों का आनन्द बढ़ जाता है। वे नृत्य करने लगते हैं। कवि वाल्मीकि ने इन सबका तन्मयता से वर्णन किया है।

इसके अष्टम पद्य में यथासंख्य अलंकार का सुन्दर प्रयोग है जहाँ आधे पद्य में केवल क्रियाएँ हैं और उत्तरार्ध में उनसे सबद्ध कर्तृपदों को उसी क्रम से रखा गया है।

ग्यारहवें पद्य में संगीत की सम्पूर्ण सामग्री का निरूपण वन में किया गया है। संगीत में वीणा की ध्वनि भ्रमरों के गुजन से, कण्ठस्वर और ताल बन्दरों की चिल्लाहट से तथा मृदंग का नाद मेघगर्जन से सम्पन्न हो रहा है। ऐसी उत्प्रेक्षा कवि ने की है। पूरे पाठ का सस्वर संगीतात्मक उच्चारण अनुपम प्रभाव डालता है। इसमें उपजाति छन्द का प्रयोग है।

अभ्यास:

1. उत्तर लिखत -

- (i) वर्षाकाले के स्वदेशान् यान्ति ?
- (ii) वर्षासु नवं जलं कीदृशं भवति ?
- (iii) कीदृशम् आम्रफलं भूमौ पतति ?
- (vi) वनानि दिनस्य कस्मिन् भागे अधिकं शोभन्ते ?
- (v) मयूरैः सह के नदन्ति ?

उत्तराणि-

- (i) वर्षाकाले प्रवासिनः स्वदेशान् यान्ति ।
- (ii) वर्षासु नवं जलं पर्वतधातुताम्रम् भवति ।
- (iii) अनेकवर्णं आम्रफलं भूमौ पतति ।
- (vi) वनानि दिनस्य अपराह्णे भागे अधिकं शोभन्ते ।
- (v) मयूरैः सह गजेन्द्राः नदन्ति ।

2. निम्नलिखितशब्दानां पर्यायवाचिनः त्रीन् शब्दान् लिखत ।
मेघः, भ्रमरः, सागरः ।

उत्तराणि-

- मेघः-अम्रः, वारिधः, जलदः ।
भ्रमरः-अलि, षड्पदः, भृंगः ।
सागरः-समुद्रः, वारिधः, जलधिः ।

3. रिक्तस्थानानि समुचितपदैः पूरयत -
 (जम्बुफलं, प्रशान्तं, मयूरैः, महत्सु, वायुः, शैलापगाः)
 (i) रजः सहिमोऽद्य ।
 (ii) शीघ्रतरं वहन्ति ।
 (iii) प्रभुज्यते प्रकामम् ।
 (iv) सार्धं समदा नदन्ति ।
 (v) शृङ्गेषु महीधराणाम् ।

उत्तराणि-

- (i) रजः प्रशान्तं सहिमोऽद्य वायुः ।
 (ii) शैलापगाः शीघ्रतरं वहन्ति ।
 (iii) प्रभुज्यते जम्बुफलं प्रकामम् ।
 (iv) सार्धं मयूरैः समदा नदन्ति ।
 (v) महत्सु शृङ्गेषु महीधराणाम् ।

4. प्रकृति-प्रत्यय-विच्छेदं कुरुत -

- (i) प्रवासिनः (ii) विश्रम्य (iii) नदन्तः (vi) विपक्वम्
 (v) विलम्बमानाः

उत्तराणि-

- (i) प्रवासिनः-प्र + वस् + णिनि ।
 (ii) विश्रम्य-विश्रम् + ल्यप् ।
 (iii) नदन्तः-नुद् + शतृ ।
 (vi) विपक्वम्-वि + पच् + क्तः ।
 (v) विलम्बमानाः-वि + लम्ब + शानच् ।

5. स्ववाक्येषु प्रयोगं कुरुत-

- (i) यान्ति (ii) नृत्यन्ति (iii) गर्जन्ति (vi) पिबन्ति (v) त्यजन्ति

उत्तराणि-

- (i) यान्ति-वर्षाकाले प्रवासिनः गृहं यन्ति ।
 (ii) नृत्यन्ति-वने मयूराः नृत्यन्ति ।
 (iii) गर्जन्ति-पावसऋतौ मेघाः गर्जन्ति ।
 (vi) पिबन्ति-बालकाः जलं पिबन्ति ।
 (v) त्यजन्ति-प्रातः काले ब्रह्मचारिणः निद्रां त्यजन्ति ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

✦ अधोलिखितानां प्रश्नानां समुचितम् उत्तरं प्रदत्तेषु विकल्पेषु चित्वा लिखत-

1. 'वर्षावर्णनम्' पाठः कस्मात् ग्रन्थात् संकलित अस्ति ?

(क) रामायणात्

(ख) महाभारतात्

(ग) उत्तररामचरितात्

(घ) प्रतिमानाटकात्

उत्तरम्-(क)

2. रामायणस्य रचनाकारः कः वर्तते ?
 (क) कालिदासः
 (ख) वाल्मीकिः
 (घ) भारविः
 उत्तरम्-(ख)
3. 'वर्षावर्णनम्' पाठः रामायणस्य कस्मात् काण्डात् समुद्भूतः विद्यते ?
 (क) अयोध्याकाण्डात्
 (ख) सुन्दरकाण्डात्
 (घ) बालकाण्डात्
 उत्तरम्-(ग)
4. केषाम् यात्रा स्थगिता ?
 (क) नराणाम्
 (ख) तीर्थयात्रिणाम्
 (घ) वसुधाधिपानाम्
 उत्तरम्-(घ)
5. मयूराणां ध्वनिः का कथ्यते ?
 (क) केका
 (ख) मयूरखः
 (घ) मयूरवाणी
 उत्तरम्-(क)
6. विद्युत्पताकाः मेघाः कीदृशं गर्जन्ति ?
 (क) मताः उष्ट्राः इव
 (ख) मताः गजेन्द्राः इव
 (घ) मताः वृषभाः इव
 उत्तरम्-(ख)
7. वारिधराः कुत्र विश्रम्य प्रयान्ति ?
 (क) वृक्षशृंगेषु
 (ख) प्रासादशिखरेषु
 (घ) महीधरेषु
 उत्तरम्-(ग)
8. के मदं त्यजन्ति ?
 (क) गजाः
 (ख) बालकाः
 (घ) षट्चरणाः
 उत्तरम्-(घ)